संस्कृत विभाग

DEPARTMENT OF SANSKRIT

कला, संचार एवं भाषा संकाय

SCHOOL OF ARTS, COMMUNICATION AND LANGUAGES

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप

According to NEP 2020

चतुर्वर्षीय स्नातक कक्षा के द्वितीय वर्ष का पाठ्यक्रम

2nd YEAR'S SYLLABUS OF

FOUR–YEAR UNDER GRADUATION

PROGRAMME

2026–2027 से प्रवृत्त

W.E.F.

SESSION 2026–2027

हेमवती नन्दन बहुगुणा गढवाल विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

श्रीनगर गढवाल, उत्तराखण्ड

HEMVATI NANDAN BAHUGUNA GARHWAL UNIVERSITY

(A CENTRAL UNIVERSITY)

SRINAGAR GARHWAL, UTTARAKHAND

COURSE STRUCTURE FOR SECOND YEAR UG (FYUP)

UNDER NEP–2020

HNBGU

Course Category	Semester-III				Semester-IV		
	Subject/Title	No. of paper	Credits		Subject /Title	No. of paper	Credits
Major-I (One Subject) Major	DSC Major-III	1	5		DSC Major-IV	1	5
Minor-I (One Subject)	DSC Minor-I	1	4		DSC Minor-II	1	4
SEC	SEC Major-V	1	3		SEC Major-VI	1	3
MD/ID	MD/ ID-III	1	4		MD/ ID-IV	1	4
AEC (Language Based Course)	Indian Modern Regional Language-I	1	2		Indian Modern Regional Language-II	1	2
VAC/AEC	IKS Or Culture, Traditions and Moral Values	1	2		IKS Or Culture, Traditions and Moral Values	1	2
Total		6	20			6	20
NHEQF Level-5	Student on exit after successfully completing Second year (i.e., securing minimum required 80 credits + 4 Credits in one Vocational Course/Skills-Enhancement Course of 4 credits) will be awarded "Undergraduate Diploma" of Two year, in related field/discipline/subject.						

- IKS-Indian Knowledge System-AEC
- Culture, Traditions and Moral Values-VAC
- Students are required to study both courses Indian Knowledge System (IKS) and Culture, Traditions and Moral Values during the III and IV semesters. However, they will have the flexibility to study one course in each semester.
- Indian, Modern, Regional Language: Hindi, Sanskrit and English (Student have to study 2 different languages in the second year with one language in one semester and other language in another semester).
- The department may offer a 2-credit SEC Major course as either a fully theory-based or fully practical-based module.
  Note: The student will pursue one Major and One Minor from second year out of the two DSC subjects studied in the first year (i.e. I & II Semesters)..

Program Learning Outcomes for B.A. Program: –

यूजीसी की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 और यूजीसी (स्नातक डिग्री और स्नातकोत्तर डिग्री के अनुदान के लिए निर्देश के न्यूनतम मानक) विनियम, 2025 के अनुसार **बैचलर ऑफ आर्ट्स (स्नातक) कार्यक्रम** का उद्देश्य बौद्धिक विकास, आलोचनात्मक सोच और सामाजिक योगदान को बढ़ावा देने वाली बहु–विषयक, बहु–आयामी और समग्र शिक्षा प्रदान करना है।

बी.ए. कार्यक्रम को सफलतापूर्वक उत्तीर्ण करने के बाद, विद्यार्थी निम्नलिखित में सक्षम होंगे–

1. व्यापक ज्ञान का प्रदर्शन: छात्र सम्बन्धित विषय में मूल अवधारणाओं, सिद्धान्तों और पद्धतियों की गहन समझ प्राप्त करेंगे, साथ ही अन्तःविषयक परिप्रेक्ष्यों को एकीकृत करेंगे।

2. आलोचनात्मक सोच और समस्या–समाधान क्षमताएं: छात्र जटिल सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक मुद्दों का मूल्यांकन करने तथा नवीन, नैतिक और व्यावहारिक समाधान प्रस्तावित करने के लिए विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक विचार–कौशल का अनुप्रयोग करेंगे।

3. प्रभावी संचार और पारस्परिक कौशल: छात्र विविध व्यावसायिक और सामाजिक सन्दर्भों में विचारों, शोध निष्कर्षों और तर्कों को स्पष्ट और प्रभावी रूप से व्यक्त करने के लिए लिखित, मौखिक और दृश्य–संचार में प्रवीणता प्रदर्शित करेंगे।

4. शोध और विश्लेषणात्मक क्षमताएं: छात्र सैद्धान्तिक और अवधारणात्मक ढांचों द्वारा निर्देशित, वास्तविक जीवन की समस्याओं का समाधान करने के लिए उपयुक्त गुणात्मक और मात्रात्मक विधियों का उपयोग करके शोध जिज्ञासाओं की रूपरेखा का निर्माण और क्रियान्वयन करेंगे।

5. नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी: छात्र नैतिक प्रथाओं, सामाजिक न्याय और सतत विकास के प्रति सम्मान प्रदर्शित करेंगे, सामाजिक उन्नति में योगदान देंगे तथा राष्ट्रीय और वैश्विक चुनौतियों का समाधान करेंगे।

6. अन्तःविषयक दृष्टिकोण और क्षमता: छात्र सामाजिक मुद्दों पर व्यापक परिप्रेक्ष्य प्राप्त करने और बहु–विषयक समस्या–समाधान को बढ़ावा देने के लिए सम्बन्धित क्षेत्रों से ज्ञान का एकीकरण करेंगे।

7. रोजगार क्षमता और आजीवन सीखना: छात्र सरकारी, गैर–लाभकारी, शैक्षणिक या निजी क्षेत्रों में विविध आजीविका पथ को आगे बढ़ाने के लिए सामूहिक कार्य, नेतृत्व और अनुकूलन क्षमता सहित व्यावसायिक कौशल विकसित करेंगे और इस निरन्तर गतिशील विश्व में प्रासंगिक बने रहने के लिए आजीवन सीखने में संलग्न रहेंगे।

8. वैश्विक और सांस्कृतिक जागरूकता: छात्र वैश्विक और सांस्कृतिक विविधता को समझेंगे और उसकी प्रशंसा करेंगे, इस ज्ञान को स्थानीय, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भों में रचनात्मक रूप से संलग्न करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे।

DEPARTMENT OF SANSKRIT (HNBGU)
COURSE STRUCTURE FOR SECOND YEAR UG (FYUP)
UNDER NEP–2020

3rd Semester (तृतीय सत्र)–

Course Category	Paper's Title	Credit
DSC Major-III	गद्य, पद्य एवं व्याकरण	5
DSC Minor- I	गद्य एवं पद्य	4
SEC (Skill Enhancement Course) V	भारतीय रंगमंच	3
MD-III	संस्कृत साहित्य में राजनीतिक विचार (कौटिल्य अर्थशास्त्र के सन्दर्भ में)	4
AEC (Language Based Course) I	संस्कृत भाषा अध्ययन	2
VAC	संस्कृति, परम्परा एवं नैतिकमूल्य	2

4th Semester (चतुर्थ सत्र)–

Course Category	Paper's Title	Credit
DSC Major- IV	संस्कृत साहित्य का इतिहास, संस्कृति तथा निबन्ध	5
DSC Minor- II	संस्कृत साहित्य का इतिहास तथा संस्कृति	4
SEC (Communication Skills) VI	पातञ्जल योगसूत्र	3
MD- IV	संस्कृत भाषाविज्ञान के मूलतत्त्व	4
AEC (Language Based Course) II	संस्कृत भाषा अध्ययन	2
VAC	संस्कृति, परम्परा एवं नैतिकमूल्य	2

SYLLABUS OF FYUP
(DEPARTMENT OF SANSKRIT)
3rd Semester (तृतीय सत्र)–

DSC Major– I :

गद्य, पद्य एवं व्याकरण **CREDITS – 05**

COURSE OUTCOMES:

CO1:	छात्र संस्कृत साहित्य में गद्य एवं पद्य काव्य तथा वर्णोच्चारण के मूल नियमों को स्मरण करेंगे।
CO2:	छात्र जीवनोपयोगी नैतिक–सिद्धान्तों एवं संस्कृत भाषा में वर्णोच्चारण की प्रक्रिया को समझेंगे।
CO3:	वर्णोच्चारण के नियमों को जानने से उच्चारण में शुद्धता आएगी।
CO4:	शिवराजविजय एवं कुमारसम्भव के अध्ययन से छात्र तत्कालीन समाज की परिस्थितियों का सम्यक् विश्लेषण कर सकेंगे।
CO5:	छात्र शिवराजविजय एवं कुमारसम्भव के निहितार्थ को अपने जीवन में आत्मसात् करेंगे तथा वर्णों की उच्चारण पद्धति के ज्ञान द्वारा संस्कृत शास्त्रों के शुद्ध उच्चारण कर पाएंगे।

इकाई–1 : संस्कृत साहित्य में गद्य एवं पद्य काव्य का परिचय

इकाई–2 : गद्य– शिवराजविजयम् (प्रथम निःश्वास)

इकाई–3 : पद्य– कुमारसम्भवम् (पञ्चम सर्ग)

इकाई–4 : व्याकरण– पाणिनीय–शिक्षा

पाठ्य पुस्तकें एवं सन्दर्भ–ग्रन्थ–

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, वाराणसी
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी
3. शिवराजविजयः (प्रथम निःश्वासः), व्याख्याकार– डॉ. देवनारायण मिश्र, साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार,
   मेरठ
4. शिवराजविजयः (प्रथम निःश्वासः), व्याख्याकार– प्रो. जय सिंह, विजय प्रकाशन मन्दिर, वाराणसी
5. शिवराजविजयः (प्रथम निःश्वासः), व्याख्याकार– श्रीनिवास शर्मा, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी
6. कुमारसम्भवम् (पञ्चमसर्गात्मकम्) व्याख्याकार– डॉ. श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती

प्रकाशन, वाराणसी
7. कुमारसम्भवमहाकाव्यम् (पञ्चमः सर्गः) सम्पादक– डॉ बाबूराम त्रिपाठी, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा
8. पाणिनीय–शिक्षा, सम्पादक– विद्यासागर डॉ. दामोदर महतो, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
9. वर्णोच्चारणशिक्षा (श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिकृत–व्याख्या–सहिता), रामलाल कपूर ट्रस्ट, सोनीपत,
हरियाणा

DSC Minor– I :

गद्य एवं पद्य **CREDITS – 04**

COURSE OUTCOMES:

CO1:	छात्र संस्कृत साहित्य में गद्य एवं पद्य काव्य के नियमों को स्मरण करेंगे।
CO2:	छात्र शिवराजविजय एवं कुमारसम्भव में वर्णित सिद्धान्तों को समझेंगे।
CO3:	छात्र गद्य एवं पद्य काव्य की संरचना को जानेंगे।
CO4:	शिवराजविजय एवं कुमारसम्भव के अध्ययन से छात्र तत्कालीन समाज की परिस्थितियों का सम्यक् विश्लेषण कर सकेंगे।
CO5:	छात्र शिवराजविजय एवं कुमारसम्भव के निहितार्थ को अपने जीवन में आत्मसात् कर पाएंगे।

इकाई–1 : संस्कृत साहित्य में गद्य एवं पद्य काव्य का परिचय
इकाई–2 : गद्य– शिवराजविजयम् (प्रथम निःश्वास)
इकाई–3 : पद्य– कुमारसम्भवम् (पञ्चम सर्ग)

पाठ्य पुस्तकें एवं सन्दर्भ–ग्रन्थ–

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, वाराणसी
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी
3. शिवराजविजयः (प्रथम निःश्वासः), व्याख्याकार– डॉ. देवनारायण मिश्र, साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार, मेरठ
4. शिवराजविजयः (प्रथम निःश्वासः), व्याख्याकार– प्रो. जय सिंह, विजय प्रकाशन मन्दिर, वाराणसी

5. शिवराजविजयः (प्रथम निःश्वासः), व्याख्याकार– श्रीनिवास शर्मा, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी
6. कुमारसम्भवम् (पञ्चमसर्गात्मकम्) व्याख्याकार– डॉ. श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
7. कुमारसम्भवमहाकाव्यम् (पञ्चमः सर्गः) सम्पादक– डॉ बाबूराम त्रिपाठी, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा

MD– I:

संस्कृत साहित्य में राजनीतिक विचार (कौटिल्य अर्थशास्त्र के सन्दर्भ में) **CREDITS – 04**

COURSE OUTCOMES:

CO1:	छात्र संस्कृत–साहित्य में विद्यमान राजनीतिक विचारों का अध्ययन करेंगे।
CO2:	छात्र संस्कृत–साहित्य में विद्यमान राजनीतिक विचारों के अनुप्रयोग को समझेंगे।
CO3:	राजनीतिक विचारों की भारतीय अवधारणाओं को अपने जीवन में उतार सकेंगे।
CO4:	राजनीतिक विचारों की आधुनिक एवं प्राचीन भारतीय अवधारणाओं का सम्यक् विश्लेषण कर सकेंगे।
CO5:	छात्र राजनीति के वास्तविक अर्थ का उचित मूल्यांकन करते हुए उसे वर्तमान सन्दर्भों मे व्याख्यायित कर सकेंगे।

इकाई–1 : प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिन्तन : उद्भव एवं विकास

इकाई–2 : कौटिल्य के अनुसार राज्य की उत्पत्ति एवं कल्याणकारी राज्य की संकल्पना

इकाई–3 : सप्ताङ्ग एवं षाड्गुण्य सिद्धान्त

इकाई–4 : स्थानीय प्रशासन, परराष्ट्र नीति एवं सामाजिक संगठन

पाठ्य पुस्तकें एवं सन्दर्भ–ग्रन्थ–

1. कौटिल्य अर्थशास्त्रम्, हिन्दी अनुवादक– उदयवीर शास्त्री, मेहरचन्द लक्षमनदास, दिल्ली
2. संस्कृत साहित्य में राष्ट्रवाद एवं भारतीय राजशास्त्र, शशि तिवारी, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली
3. संस्कृत में राजनीतिक चिन्तन, डॉ. पङ्कजा घई कौशिक, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली
4. हिन्दू राज्यशास्त्र, अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
5. प्राचीन भारतीय शासन व्यवस्था एवं राजशास्त्र, सत्यकेतु विद्यालंकार, सरस्वती सदन, मसूरी

SEC (Skill Enhancement Course): v

भारतीय रंगमंच **CREDITS – 03**

COURSE OUTCOMES:

CO1:	छात्र नाट्य–शास्त्र में विद्यमान रंगमंच विषयक सन्दर्भों का अध्ययन करेंगे।
CO2:	छात्र प्राचीनकाल में रंगमंच के प्रयोग को समझेंगे।
CO3:	नाट्य–शास्त्र के अभिनय से सम्बन्धित दिशा–निर्देशों का पालन कर सकेंगे।
CO4:	नाट्य शास्त्र के ज्ञान द्वारा छात्र प्राचीन तथा आधुनिक रंगमंच का विश्लेषण कर सकेंगे।
CO5:	छात्र नाट्यशास्त्र में निहित अभिनय एवं रंगमंच के प्रयोग में कुशलता प्राप्त करेंगे।

इकाई–1 : भारतीय रंगमंच की परम्परा, उद्भव एवं विकास का इतिहास

इकाई–2 : रंगमंच के प्रकार

इकाई–3 : चतुर्विध अभिनय (आङ्गिक, वाचिक, आहार्य, सात्विक)

इकाई–4 : नाट्य के निर्धारक मुख्य–तत्त्व (वस्तु, नेता, रस)

पाठ्य पुस्तकें एवं सन्दर्भ–ग्रन्थ–

1. नाट्यशास्त्र (1–4भाग), सम्पादक– बाबूराम शुक्ल शास्त्री, चौखम्बा संस्थान, वाराणसी
2. नाट्यशास्त्र, सम्पादक– ब्रजमोहन चतुर्वेदी, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली
3. संक्षिप्त नाट्यशास्त्र हिन्दी भाषानुवाद सहित, राधावल्लभ त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
4. नाट्यशास्त्र की भारतीय परम्परा एवं दशरूपक, हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
5. संस्कृतनाट्यमीमांसा, केशवराम मुसलगांवकर, परिमल प्रकाशन दिल्ली

AEC (Language Based Course) I

संस्कृत भाषा अध्ययन **CREDITS 02**

COURSE OUTCOMES:

CO1:	छात्र माहेश्वरसूत्रों को स्मरण करेंगे तथा संस्कृत की सन्धि–प्रक्रिया का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
CO2:	कारक के अध्ययन से संस्कृत भाषा की वाक्य–संरचना से परिचित होंगे तथा उसके व्यावहारिक प्रयोग को समझेंगे।
CO3:	सन्धि, कारक आदि के सम्यक् ज्ञान से संवाद एवं लेखन में गति बनेगी।
CO4:	छात्र संस्कृत–भाषा की शुद्धता एवं अशुद्धता का विश्लेषण कर उचित प्रयोग को जानेंगे।
CO5:	छात्र संस्कृत लेखन में दक्षता प्राप्त कर संस्कृत में निबन्ध आदि लिखने में कुशलता प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई–1 : माहेश्वरसूत्र, वर्णों के उच्चारणस्थान, सन्धि (दीर्घ, गुण, यण्, वृद्धि,अयादि, अनुस्वार, विसर्ग,
श्चुत्व, ष्टुत्व, जश्त्व का सामान्य अध्ययन व प्रयोग)

इकाई–2 : कारक के सामान्य नियम

इकाई–3 : संस्कृत में दैनिक–व्यवहार के वाक्य एवं शब्दावली (शरीरवर्ग, परिवारवर्ग एवं भोज्यपदार्थवर्ग)

इकाई–4 : निबन्ध (रचनानुवादकौमुदी से)

I. संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्
II. आचार्यदेवो भव
III. पर्यावरणसंरक्षणम्
IV. परोपकाराय सतां विभूतयः
V. आचारः परमो धर्मः

पाठ्य पुस्तकें एवं सन्दर्भ–ग्रन्थ–

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी, भाग–1, व्याख्याकार– भीमसेनशास्त्री, भैमी प्रकाशन, दिल्ली
2. लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार– पं. ईश्वरचन्द्र, संस्कृत ग्रन्थागार, दिल्ली
3. प्रारम्भिकरचनानुवादकौमुदी, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. रचनानुवादकौमुदी, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
5. संस्कृत–व्यवहार–साहस्री, संस्कृत भारती, मातामन्दिर गली, झण्डेवालान, नई दिल्ली
6. व्यावहारिक संस्कृत प्रशिक्षक, डॉ० विजय कुमार कर्ण, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ

7. संस्कृत–रचना, डॉ. उमेशचन्द्र पाण्डेय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी

VAC:

संस्कृति, परम्परा एवं नैतिकमूल्य

CREDITS – 02

(विश्वविद्यालय द्वारा)

SYLLABUS OF FYUP
(DEPARTMENT OF SANSKRIT)
4th Semester (चतुर्थ सत्र)–

DSC Major– IV:

संस्कृत साहित्य का इतिहास, संस्कृति तथा निबन्ध **CREDITS – 05**

COURSE OUTCOMES:

CO1:	छात्र संस्कृत कवियों तथा भारतीय संस्कृति के विषय में अध्ययन करेंगे।
CO2:	छात्र प्राचीन तथा आधुनिक कवियों की शैली को समझेंगे।
CO3:	छात्र संस्कृत में निबन्ध लिखने की कला तथा भारतीय संस्कृति के महत्त्व को जानेंगे।
CO4:	छात्र प्राचीन तथा आधुनिक कवियों की शैली तथा भारतीय संस्कृति के विविध आयामों का सम्यक् विश्लेषण कर सकेंगे।
CO5:	संस्कृत काव्य–परम्परा में प्राचीन तथा आधुनिक कवियों के योगदान का उचित मूल्यांकन कर सकेंगे साथ ही संस्कृत में निबन्ध लिखने की कला तथा भारतीय संस्कृति के ज्ञान का प्रयोग कर अपने जीवन को उत्कृष्ट बना सकेंगे।

इकाई–1 : प्राचीन संस्कृत–कवि– वाल्मीकि, व्यास, भास, कालिदास, भवभूति, विशाखदत्त, बाण, सुबन्धु

इकाई–2 : आधुनिक संस्कृत कवि– आचार्य मेधाव्रत, कृष्ण कुमार अग्रवाल, कपिलदेव द्विवेदी, अभिराज राजेन्द्र मिश्र, अशोक कुमार डबराल

इकाई–3 : भारतीय संस्कृति

I. पञ्च महायज्ञ
II. आश्रम व्यवस्था
III. वर्ण व्यवस्था
IV. षोडश संस्कार
V. पुरुषार्थ

इकाई–4 : निबन्ध (संस्कृत में)

पाठ्य पुस्तकें एवं सन्दर्भ–ग्रन्थ–

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, वाराणसी
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी

3. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, रामनारायण लाल विजय कुमार, इलाहाबाद
4.
5. भारतीय संस्कृति, डॉ. प्रीति प्रभा गोयल, राजस्थानी ग्रन्थागार. जोधपुर
6. भारतीय संस्कृति, डॉ. राजकिशोर सिंह, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
7. संस्कृत–निबन्ध–शतकम्, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
8. रचनानुवादकौमुदी, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

DSC Minor– II:

संस्कृत साहित्य का इतिहास तथा संस्कृति **CREDITS – 04**

COURSE OUTCOMES:

CO1:	छात्र संस्कृत कवियों तथा भारतीय संस्कृति के विषय में अध्ययन करेंगे।
CO2:	छात्र प्राचीन तथा आधुनिक कवियों की शैली को समझेंगे।
CO3:	छात्र संस्कृत की काव्य रचनाओं तथा भारतीय संस्कृति के महत्त्व को जानेंगे।
CO4:	छात्र प्राचीन तथा आधुनिक कवियों की शैली तथा भारतीय संस्कृति के विविध आयामों का सम्यक् विश्लेषण कर सकेंगे।
CO5:	संस्कृत काव्य–परम्परा में प्राचीन तथा आधुनिक कवियों के योगदान का उचित मूल्यांकन कर सकेंगे साथ ही भारतीय संस्कृति के ज्ञान का प्रयोग कर अपने जीवन को उत्कृष्ट बना सकेंगे।

इकाई–1 : प्राचीन संस्कृत–कवि– वाल्मीकि, व्यास, भास, कालिदास, भवभूति, विशाखदत्त, बाण, सुबन्धु

इकाई–2 : आधुनिक संस्कृत कवि– आचार्य मेधाव्रत, कृष्ण कुमार अग्रवाल, कपिलदेव द्विवेदी, अभिराज राजेन्द्र मिश्र, अशोक कुमार डबराल

इकाई–3 : भारतीय संस्कृति

I. पञ्च महायज्ञ
II. आश्रम व्यवस्था
III. वर्ण व्यवस्था
IV. षोडश संस्कार
V. पुरुषार्थ

पाठ्य पुस्तकें एवं सन्दर्भ–ग्रन्थ–

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, वाराणसी
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी
3. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, रामनारायण लाल विजय कुमार, इलाहाबाद
4.
5. भारतीय संस्कृति, डॉ. राजकिशोर सिंह, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
6. भारतीय संस्कृति, डॉ. प्रीति प्रभा गोयल, राजस्थानी ग्रन्थागार. जोधपुर

MD–IV:

संस्कृत भाषाविज्ञान के मूलतत्त्व **CREDITS – 04**

COURSE OUTCOMES:

CO1:	छात्र भाषा विज्ञान के सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
CO2:	भाषा परिवर्तन के कारणों को समझने का प्रयास करेंगे।
CO3:	भाषा की विभिन्न लिपियों का अध्ययन करते हुए देवनागरी लिपि के महत्त्व को जानेंगे।
CO4:	भाषा विज्ञान के आधार पर संस्कृत भाषा की विशेषताओं का विश्लेषण कर सकेंगे।
CO5:	संस्कृत भाषा तथा देवनागरी लिपि का उचित मूल्यांकन कर सकेंगे।

इकाई–1 : भाषा का अर्थ, विविधरूप, उत्पत्ति एवं विकास, भाषा परिवर्तन के कारण, भाषा की सामान्य विशेषताएँ

इकाई–2 : भारोपीय भाषा परिवार में संस्कृत का महत्त्व

इकाई–3 : ध्वनि–विज्ञान, वाक्य–विज्ञान

इकाई–4 : लिपि, ध्वनि तथा वर्ण का सम्बन्ध, चित्रलिपि, भावलिपि, ध्वनिलिपि, देवनागरीलिपि की वैज्ञानिकता एवं उत्कृष्टता

पाठ्य पुस्तकें एवं सन्दर्भ–ग्रन्थ–

1. भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
2. भाषाविज्ञान, डॉ. कर्ण सिंह, साहित्य भण्डार, मेरठ
3. भाषाविज्ञान, डॉ भोलानाथ तिवारी, किताब महल प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद
4. भाषाविज्ञान की भूमिका, आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा/दीप्ति शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

SEC (Skills Enhancement Course) VI

पातञ्जल योगसूत्र **CREDITS 03**

COURSE OUTCOMES:

CO1:	छात्र योगशास्त्र की परम्परा तथा पातञ्जल योगसूत्र का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
CO2:	छात्र योग की भारतीय अवधारणा से परिचित होंगे तथा उसके व्यावहारिक प्रयोग को समझेंगे।
CO3:	छात्र योग को अपने प्रतिदिन के जीवन का अंग बना सकेंगे।
CO4:	योग की प्राचीन एवं आधुनिक अवधारणाओं का सम्यक् विश्लेषण कर उचित प्रयोग को जानेंगे।
CO5:	छात्र योग के वास्तविक अर्थ को समझकर उसे आत्मसात कर सकेंगे।

इकाई–1 : योगशास्त्र की परम्परा एवं पातञ्जल योगसूत्र

इकाई–2 : समाधिपाद (1–15 सूत्र)

इकाई–3 : समाधिपाद (23–29 सूत्र) **तथा साधनपाद** (1–3 सूत्र)

इकाई–4 : साधनपाद (29–55 सूत्र) **तथा विभूतिपाद** (1–4 सूत्र)

पाठ्य पुस्तकें एवं सन्दर्भ–ग्रन्थ–

1. पातञ्जल योगदर्शन, गीताप्रेस, गोरखपुर
2. योगप्रदीप, गीताप्रेस, गोरखपुर
3. पातञ्जलयोगदर्शनम् (व्यासभाष्यसंवलितम्), व्याख्याकार– सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
4. पातञ्जल–योगदर्शन–भाष्यम्, भाष्यकार– आचार्य राजवीर शास्त्री, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली
5. पातञ्जल–योगदर्शनम्, उदयवीर शास्त्री, विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, नई दिल्ली

AEC (Language Based Course) II

संस्कृत भाषा अध्ययन **CREDITS 02**

COURSE OUTCOMES:

CO1:	छात्र माहेश्वरसूत्रों को स्मरण करेंगे तथा संस्कृत की वर्णोच्चारण प्रक्रिया व सन्धि नियमों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
CO2:	कारक के अध्ययन से संस्कृत भाषा की वाक्य–संरचना से परिचित होंगे तथा उसके व्यावहारिक प्रयोग को समझेंगे।
CO3:	वर्णोच्चारण, सन्धि, कारक आदि के सम्यक् ज्ञान से संवाद एवं लेखन में गति बनेगी।
CO4:	छात्र संस्कृत–भाषा की शुद्धता एवं अशुद्धता का विश्लेषण कर उचित प्रयोग को जानेंगे।
CO5:	छात्र संस्कृत लेखन में दक्षता प्राप्त कर संस्कृत में निबन्ध आदि लिखने में कुशलता प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई–1 : माहेश्वरसूत्र, वर्णों के उच्चारणस्थान, सन्धि (दीर्घ, गुण, यण्, वृद्धि,अयादि, अनुस्वार, विसर्ग,
श्चुत्व, ष्टुत्व, जश्त्व का सामान्य अध्ययन व प्रयोग)

इकाई–2 : कारक के सामान्य नियम

इकाई–3 : संस्कृत में दैनिक–व्यवहार के वाक्य एवं शब्दावली (शरीरवर्ग, परिवारवर्ग एवं भोज्यपदार्थवर्ग)

इकाई–4 : निबन्ध (रचनानुवादकौमुदी से)

I. संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्
II. आचार्यदेवो भव
III. पर्यावरणसंरक्षणम्
IV. परोपकाराय सतां विभूतयः
V. आचारः परमो धर्मः

पाठ्य पुस्तकें एवं सन्दर्भ–ग्रन्थ–

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी, भाग–1, व्याख्याकार– भीमसेनशास्त्री, भैमी प्रकाशन, दिल्ली
2. लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार– पं. ईश्वरचन्द्र, संस्कृत ग्रन्थागार, दिल्ली
3. प्रारम्भिकरचनानुवादकौमुदी, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. रचनानुवादकौमुदी, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
5. संस्कृत–व्यवहार–साहस्री, संस्कृत भारती, मातामन्दिर गली, झण्डेवालान, नई दिल्ली

6. व्यावहारिक संस्कृत प्रशिक्षक, डॉ. विजय कुमार कर्ण, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ
7. संस्कृत–रचना, डॉ. उमेशचन्द्र पाण्डेय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी

VAC:

संस्कृति, परम्परा एवं नैतिकमूल्य **CREDITS – 02**

(विश्वविद्यालय द्वारा)